9. लेजर उपचार विधि क्या है?

लेजर एक प्रकार की केन्द्रित प्रकाश की किरण है। सही समय पर लेजर डायबिटीक रेटिनोपैथी के अधिकांश गंभीर समस्याओं से बचा सकता है। लेजर द्वारा किये हुए उपचार में मरीज को भर्ती करने की आवश्यकता नहीं है। लेजर से पहले या बाद में कई परहेज नहीं हैं। इस विधि में सर्वप्रथम मरीज की आँखों में पुतली फैलानेवाला ड्रॉप डाला जाता है। उपचार के कुछ घंटे पश्चात आप अपनी आँखों को पुनः उपयोग में ला सकते हैं। यह एक पूरी तरह दर्द रहित प्रक्रिया है।

10. लेजर सर्जरी से होनेवाले दुष्परिणाम

लेजर से होनेवाले फायदे की तुलना में दुष्परिणाम बहुत कम है। तथा ज्यादातर मरीजों को रोजमर्रा में कार्य में असुविधा नहीं होती है। कुछ दुष्परिणाम है -

1. आँखों के चारो ओर की दृष्टि व संकुचित होना।
2. रंगों को पहचानने में परेशानी होना।
3. रात में कम दिखाई देना।

11. डायबिटीक रेटिनोपैथी का ऑपरेशन कैसे होता है

ऐसे मरीज जिसमें डायबिटीक रेटिनोपैथी अंतिम अवस्था में होने के कारण लेजर द्वारा उपचार संभव न हो नेत्र विशेषज्ञ ऑपरेशन कराने की सलाह देते हैं। जिसे विट्रेक्टॉमी ऑपरेशन कहते हैं। इस विधि में रेटिना के अंदर के रक्त युक्त द्रव्य को बदल दिया जाता है। जिससे रेटिना स्वच्छ हो सकती है। कुछ मरीजों में इससे दृष्टि बेहतर हो सकती है।

12. क्या नियमित जांच करवाने पर नेत्र परीक्षण से डायबिटीक रेटिनोपैथी का इलाज संभव है?

समय समय पर नेत्र परीक्षण करवाने से डायबिटीक रेटिनोपैथी के लक्षणों की डॉक्टर द्वारा जल्दी पहचान संभव है। जिससे इसके दुष्प्रभाव जैसे नजर का कम होना आदि से बचा जा सकता है। जितनी शुरूवाती स्तर पर बिमारी का पता चलेगा उतना अच्छा इलाज संभव होगा।

14. लेजर ऑपरेशन के पश्चात क्या मैं अपनी दृष्टि को पुनः प्राप्त कर सकता हूँ?

लेजर सर्जरी का मुख्य उद्देश्य दृष्टि दोषों को दूर करने तथा दृष्टि क्षय होने से रोकना है। इससे दृष्टि को पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है। परंतु दृष्टि को और अधिक क्षय होने से बचाया जा सकता है।

15. मेरे आँखों के चश्में का नम्बर बार-बार बदलता है क्या इसका डायबिटीज से कोई संबंध हो सकता है?

हां मधुमेह के रोगियों में खून में शर्करा की मात्रा घटते बढ़ते रहने की वजह से आपके चश्में का नंबर भी बदल सकता है। मोतियाबिंद भी डायबिटीज के मरीजों में जल्दी होता है। चश्में के नम्बर की सही जांच के पहले डायबिटीज नियंत्रण आवश्यक है। याद रखिए डायबिटीक रेटिनोपैथी आँख की अपनी बीमारी नहीं है यह शरीर में डायबिटीज होने का आँखों पर असर है। अतः निम्न जांच समय-समय पर डॉक्टर की सलाह के अनुसार जरूर कराएँ।

विश्वस्तरीय नेत्ररोग सुविधाएं

- बिना इंजेक्शन मोतियाबिंद ऑपरेशन (टॉपीकल फेको) ड्राप से शून्य करके।
- फेको द्वारा बिना टांके मोतियाबिंद ऑपरेशन एवं लेंस प्रत्यारोपण
- लेसिक लेजर द्वारा चश्में का नंबर हटाने की सुविधा, डिजीटल नेत्र परीक्षण।
- डायबिटीज, ब्लड प्रेशर हेतु लेजर सुविधा।
- आँख की प्लास्टिक सर्जरी एवं एंजियोग्राफी।
- B-scan आँखों की सोनोग्राफी।
- O.C.T. आँख के नस (Optic Nerve) के फोटोग्राफ हेतु।
- पैरामेट्री जांच काला मोतियाबिंद के लिए।

SBH EYE HOSPITAL PVT. LTD.

"WORLD CLASS EYE CARE"

रायपुर

विजेता कॉम्प्लेक्स के सामने, न्यू राजेन्द्र नगर, रायपुर

फोन : 07440-777771

छोटी लाइन के पास, फाफाडीह, रायपुर

फोन : 07440-777771

भिलाई

ए-32, नंदिनी रोड, उत्तम टॉकिज के सामने, भिलाई

फोन : 07440-777771

SBH EYE HOSPITAL PVT. LTD.

"WORLD CLASS EYE CARE"

डायबिटीज

आपकी दृष्टि छीन सकती है।

आँखों की सभी प्रकार की बीमारियों का अत्याधुनिक मशीनों द्वारा ऑपरेशन एवं लेजर की सुविधा

1. मधुमेह का आंखों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

- मोतियाबिंद का खतरा बढ़ जाता है।

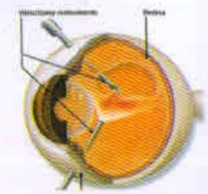

- नजर कमजोर होना, बार - बार संक्रमण, काला मोतियाबिंद होना, आंखों की मांसपेशियों का अनिश्चित कालीन लकवा होना जिसके कारण नजर का दोहरा होना।
- मधुमेह में आंखों पर सबसे बुरा प्रभाव दृष्टि पटल, या आँख के पर्दे पर पड़ता है जिसे डायबिटीक रेटिनोपैथी कहते है।

2. डायबिटीक रेटिनोपैथी क्या है?

दृष्टिपटल आंखों की सबसे निचली परत होती है, जो कि प्रकाश के प्रति संवेदनशील होती है। मधुमेह रेटिना में खून की नसों को प्रभावित करता है। हमारी आंख एक कैमरे के जैसे होती है जिसमें लेंस किसी वस्तु के चित्र को आँख के पर्दे (रेटिना) पर बनाता है। आँख का पर्दा रेटिना कैमरे की रील की तरह कार्य करता है। रेटिना पर खून की नसों में रक्त प्रवाह धीरे-धीरे कम होने लगता है। इसकी तीन अवस्थाएं होती है -

1. प्रारंभिक अवस्था

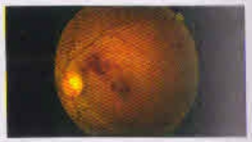

इस अवस्था में रक्त प्रवाह कम होने जाँच में प्रारंभिक लक्षण पाए जाते हैं। मरीज को इस अवस्था का पता नहीं चलता है। इस अवस्था में नजर पूरी तरह सामान्य रह सकती है कोई नेत्र विशेषज्ञ ही इस अवस्था का पता लगा सकता है।

2. दृष्टिपटल पर सूजन

इस अवस्था में इलाज हो जाने पर दृष्टि पूरी तरह बचाई जा सकती है। रक्त प्रवाह कम होने कारण दृष्टिपटल (रेटिना) मध्य में सूजन आने लगती है।

3. उग्र अवस्था

यह अत्यंत गंभीर अवस्था है जिसमें खून की नई नसे बन जाती है जिनमें रक्तस्त्राव होकर नजर कम हो जाती है। यह नसें दृष्टिपटल रेटिना पर खिचाव करके दृष्टिपटल को फाड़ सकती है।

ध्यान रहे कि डायबिटीक रेटिनोपैथी की बीमारी अपरिवर्तनीय है। एक बार दृष्टि कम होने, दृष्टि वापस आना निश्चित नहीं है अतः अत्यंत सतर्क रहें। उपचार से केवल बीमारी को रोका जा सकता है।

3. डायबिटीक में रेटिनोपैथी (दृष्टिपटल खराब) होने का खतरा किसे है?

- हर व्यक्ति जिसे डायबिटीज है उसे डायबिटीक रेटिनोपैथी का खतरा है।

- कम उम्र से शुगर (डायबिटीक) होने पर 80% लोगों की यह बीमारी हो सकती है। अन्य खतरें
- बचपन से शुगर (डायबिटीज)
- अनियंत्रित शुगर
- ब्लड प्रेशर की बिमारी
- हृदय रोग
- रक्त की कमी
- किडनी (गुर्दे) की बिमारी
- गर्भावस्था
- उच्च रक्त वसा

ध्यान रहे डायबिटीज (शुगर) का अच्छा नियंत्रण होने पर भी डायबिटीक रेटिनोपैथी हो सकती है।

4. डायबिटीक रेटिनोपैथी के बचाव के उपाय

1. ब्लड शुगर में कंट्रोल
2. वजन कंट्रोल
3. दिन में प्रातः काल के समय नियमित आधा घंटा तेज चलना
4. ब्लड प्रेशर कंट्रोल
5. धुम्रपान न करें।

5. मुझे कैसे पता चलेगा की मुझे डायबिटीक रेटिनोपैथी हो गया है?

शुरूआत में नजर में कोई कमी नहीं आती।

प्रारंभिक अवस्था में स्वयं को यह पता नहीं चल पाता कि आपको डायबिटीक रेटिनोपैथी है। जब तक आपको यह पता चलेगा तब तक यह बिमारी आपको 75 प्रतिशत तक प्रभावित कर चुकी हुई होगी। आपकी आँखों की नसें फटकर रेटिना में खून के धब्बे बना चुके होंगे। इसलिए यह जरूरी है कि यदि आपको डायबिटीज खून की कमी हाई ब्लड प्रेशर या किडनी से संबंधित कोई भी बिमारी है तो आप नेत्र चिकित्सक से परामर्श जल्द से जल्द ले। प्रारंभिक अवस्था में होने वाले उपचार से आप अपनी आँखों में होनेवाली इस बिमारी से बच सकते हैं।

6. मुझे अपनी आँखों की जांच कितने नियमित करवानी है?

यदि आपको शुगर है तो आप प्रतिवर्ष अपनी आँखों के पर्दे की नेत्र चिकित्सक से जांच अवश्य कराए। जांच मे चिकित्सक द्वारा आपकी आँखों में ड्रॉप डालकर आपकी पुतली को बड़ा किया जाता है जिससे चिकित्सक आपकी आँखों में रेटिना की अच्छी तरह से जांच कर सके। इसके पश्चात यदि आपकी आँखों में एक बार डायबिटीक रेटिनोपैथी के कुछ लक्षण मिल जाते है या गर्भावस्था किडनी रोग हो तो नेत्र चिकित्सक आपको अन्य दूसरे जाँच दवाईयां एवं आवश्यकतानुसार पुनः जाँच हेतु अपने को सलाह देते हैं।

7. फ्लुरेसीन एन्जियोग्राफी क्या है?

इस जांच में आपके हाथ में एक रंग का इंजेक्शन लगाकर आँखों में दृष्टिपटल (रेटिना) के चित्र लिए जाते है। यह रंग रेटिना में पहुंचकर यह बताता है कि रेटिना में रक्त का प्रवाह कितना कम है। इस जांच की सहायता से चिकित्सक को उपचार का भी निर्णय करने में भी सहायता मिलती है। डायबिटीक रेटिनोपैथी का इलाज उपचार के अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों को पालन करके ही किया जाता है।

8. उपचार की विभिन्न विधियाँ क्या है?

प्रारंभिक अवस्था को किसी उपचार की आवश्यकता नहीं है केवल डायबिटीज नियंत्रण पैदल चलना, प्रणायाम तथा नियमित जांच ही पर्याप्त है।

1. लेजर द्वारा उपचार -

रेटिनों में सूजन / शुरूवाती रक्त के धब्बे आने पर लेजर किया जाता है।

2. रक्त की नसें रोधक इंजेक्शन क्या है?

कुछ चुनिंदा मरीजों में लेजर के साथ ये इंजेक्शन उपचार में सहायक होते हैं। यह दर्द रहित इंजेक्शन होता है जिसे आंख के अंदर लगाया जाता है।

3. विट्रेक्टॉमी ऑपरेशन

आँख में रक्त ज्यादा होने पर अथवा रेटिना (दृष्टि पटल) पर गंभीर खतरा होने पर विट्रेक्टॉमी ऑपरेशन एवं इसके साथ जुड़े हुए अन्य विधियों द्वारा उपचार किया जाता है। ध्यान रहें - इन सब उपचारों के साथ डायबिटीज का नियंत्रण सुबह चलना, प्राणायाम भी अत्यंत आवश्यक है ऐसा ना करने पर पुनः नजर कम हो सकती है तथा इलाज लग सकता है।